हमें पुराने नियम की आवश्यकता क्यों है

हमें पुराने नियम की आवश्यकता क्यों है

Why We Need the Old Testament
David Beaty
© 2020 River Oaks Community Church 1855 Lewisville-Clemmons Road
Clemmons, NC 27012 riveroakschurch.org

विषय सूची

प्रस्तावना

7

अध्याय 1

पुराने नियम को यीशु और आरम्भिक कलीसिया ने कैसे समझा

9

अध्याय 2

पुराने नियम को सीखने का महत्व

12

अध्याय 3

पुराने नियम से सम्बंधित प्रश्न

16

आगे के अध्ययन के लिए संसाधन

23

प्रस्तावना

“पुराने नियम का परमेश्वर नए नियम का परमेश्वर नहीं है!”। मैं अपने मित्र की इस टिप्पणी से अचम्भित हो गया क्योंकि मुझे पता था कि उसका अपनी कलीसिया में प्रभावशाली पद है। जाहिर है, सन्डे स्कूल की शिक्षाओं ने उसे स्पष्ट रूप से, इस बात का पक्का विश्वास दिला दिया था कि पुराने नियम में परमेश्वर के लोगों द्वारा हिंसा और नये नियम में यीशु द्वारा “अपना दूसरा गाल भी फेर दो” की शिक्षा में कोई ताल-मेल नहीं हो सकता। उसने पुराने और नए नियम के वर्णनों को ऐसे देखा जो संभवतः एक पवित्र लेखक द्वारा प्रेरित नहीं हो सकते थे ।

पुराने और नए नियम के बीच के अंतर पर 2018 के उपदेश में बल दिया गया था जिसमें अमेरिका के एक सबसे बड़े चर्चों में से एक के पादरी ने मसीहियों को पुराने नियम में से “अलग” करने के लिए बुलाया। इस लोकप्रिय पादरी और लेखक ने अधिक प्रभावी सुसमाचार प्रचार के उद्देश्य के लिए पुराने नियम के उपयोग को कम करने के अपने आह्वान को उचित ठहराया। उनके विचार में, मसीहियों को "यहूदी धर्मग्रंथों से अलग" होना चाहिए ताकि अविश्वासियों के लिए यीशु में विश्वास करना "मुश्किल न हो"।

मसीहियों के लिए पुराने नियम के मूल्य के बारे में संदेह उतना ही पुराना है जितना कि मसीही कलीसिया। दूसरी शताब्दी में, एक प्रभावशाली चर्च के सदस्य मारसियन ने पुराने नियम के विरुद्ध बोला। वह इस बात पर विश्वास करता था कि पुराने नियम का परमेश्वर यीशु के पिता से भिन्न था।

मारसियन ने, पुराने नियम को अस्वीकार करके और नए को कम करके सुसमाचार का अपना ही संस्करण रखा । मारसियन को अपने समय के मसीही चर्च से निकाल दिया गया, और उसने अपना धन और प्रभाव प्रतिद्वंद्वी चर्च आरम्भ करने में लगाया जो बहुत सदियों तक बना रहा। मसीही कलीसिया के लिए मान्यता प्राप्त सिद्धांत (प्रेरित पुस्तकों का आधिकारिक संग्रह) तैयार करने में मारसियन के विचारों पर चर्च की प्रतिक्रिया महत्वपूर्ण थी|[1]
इस परेशानी को देखते हुए कि कई लोगों ने पुराने और नए नियमों में सामंजस्य स्थापित कर लिया है, क्या हमें पुराने नियम को अब हमारे अध्ययन के लायक नहीं समझना चाहिए? क्या हमें उस से “अलग” हो जाना चाहिए और सिर्फ नए नियम पर केन्द्रित रहना चाहिए? नहीं। हमें पुराने नियम से अलग होने की आवश्यकता नहीं है – हमें उसे समझने की आवश्यकता है। हमें यह समझने की आवश्यकता है कि परमेश्वर ने हमें सुसमाचार में सत्ताईस पुस्तकों की जगह छयासठ पुस्तके क्यों दीं। हमें अपने बच्चों को पुराना नियम सिखाने और अपने छोटे समूहों में इसका अध्ययन करने की आवश्यकता है। हमें यह जानने की आवश्यकता है कि यीशु ने क्यों कहा कि: “मनुष्य केवल रोटी ही से नहीं, परन्तु हर एक वचन से जो परमेश्वर के मुख से निकलता है, जीवित रहेगा “ (मत्ती 4:4, व्यवस्थाविवरण 8:3 से संदर्भित किया गया है)।

---

[1] डैनियल जे। ट्रेयर और वाल्टर ए। एलवेल, एड।, इवेंजेलिकल डिक्शनरी ऑफ थियोलॉजी, तीसरा संस्करण (ग्रैंड रैपिड्स: बेकर एकेडमिक, 2017) 524- 525।

अध्याय 1
पुराने नियम को यीशु ने और आरम्भिक कलीसिया ने कैसे समझा

उस पवित्रशास्त्र को जिसे हम पुराने नियम की तरह जानते हैं वह एकमात्र पवित्र शास्त्र था जो यीशु और उसके आरंभिक अनुयायियों के पास था। यीशु ने अपना सांसारिक जीवन उस पवित्रशास्त्र के आधार पर जिया। उसमें से बताया, उसमें से पढ़ाया, और उसे पूरा करने के लिए जीवित रहा। उसने सुसमाचार को बहुत सम्मान दिया, यह कह कर:

> यह न समझो, कि मैं व्यवस्था या भविष्यद्वक्ताओं की पुस्तकों को लोप करने आया हूँ, लोप करने नहीं, परन्तु पूरा करने आया हूँ। क्योंकि मैं तुम से सच कहता हूँ, कि जब तक आकाश और पृथ्वी टल न जाएँ, तब तक व्यवस्था से एक मात्रा या एक बिंदु भी बिना पूरा हुए नहीं टलेगा। इसलिये जो कोई इन छोटी से छोटी आज्ञाओं में से किसी एक को तोड़े, और वैसा ही लोगों को सिखाए, वह स्वर्ग के राज्य में सब से छोटा कहलाएगा, परन्तु जो कोई आज्ञाओं का पालन करेगा और उसे सिखाएगा, वही स्वर्ग के राज्य में महान कहलाएगा। (मत्ती 5:17-19)

मत्ती अध्याय 5 के बाद के पदों में, छह बार ऐसा होता है जब यीशु एक पुराने नियम के पद से बताते या संकेत देते हैं। फिर वह प्रत्येक आदेश या निषेध के पीछे मन की मनोवृत्ति को संबोधित करने की आवश्यकता की व्याख्या करते है। यीशु ने पुराने नियम की शिक्षा को बर्खास्त नहीं किया। उन्होंने उसे समझाया और लागू किया।

यीशु ने हमेशा पवित्रशास्त्र को परमेश्वर का आधिकारिक सत्य माना। मसीह के लिए, यह कहना, "यह लिखा है" प्रमाण देना और बात को सुलझाना था। कपटी फरीसियों को अपने प्रतिउत्तर में, उसने बहुत बार कहा, "यह लिखा है," या "क्या तुमने नहीं पढ़ा.....," सुसमाचार में से स्थायी सत्य प्रदान करना (उदाहरण, मत्ती 19:4, 21:13)। जब सदुकियों को सही करते हुए, यीशु ने सुसमाचार से उनके अनुचित विचारों को सही करने का निवेदन किया :

> यीशु ने उन्हें उत्तर दिया, "तुम पवित्रशास्त्र और परमेश्वर की सामर्थ्य नहीं जानते; इस कारण भूल में पड़े हो। क्योंकि जी उठने पर वे विवाह में न दिए जाएँगे परन्तु स्वर्ग में परमेश्वर के दूतों के समान होंगे। परन्तु मरे हुओं के जी उठने के विषय में क्या तुम ने यह वचन नहीं पढ़ा जो परमेश्वर ने तुम से कहा: "मैं अब्राहम
> का परमेश्वर, और इसहाक का परमेश्वर, और याकूब का परमेश्वर हूँ? वह मरे हुओं का नहीं, परन्तु जीवतों का परमेश्वर है। (मत्ती 22:29-32)

यीशु ने बहुत बार पुराने नियम से भजन संहिता की पुस्तक को संदर्भित किया, यह प्रकट करने के लिए कि वह कौन है और वह क्या करने आया है। उसने भजन 110:1 को अपने आप पर प्रमाण की तरह लागू किया कि वह दाऊद राजा का भी प्रभु था (मत्ती 22:43-45)।

उसने अपने ठुकराए जाने, दुख उठाने और ऊंचे पर उठाए जाने की भविष्यवाणी करने के लिए भजन संहिता 118:22-23 से संदर्भित किया (मत्ती 21:42)। क्रूस पर मरते समय, उसने भजन संहिता 22 को अपने ऊपर लागू किया: "हे मेरे परमेश्वर, हे मेरे परमेश्वर, तू ने मुझे क्यों छोड़ दिया?" (मत्ती 27:46)

अपने पुनरुत्थान के बाद, यीशु अपने दो अनुयायियों को इम्माऊस के रास्ते में दिखाई दिए। वे उसे पहचानने में असफल रहे, और तब तक बातें करते रहे, जब तक उसने अपने आप को प्रकट न कर दिया, और कहा: "हे मूर्खों, और जो कुछ भविष्यद्वक्ताओं ने कहा है, उन सब पर विश्वास करने के लिए हृदयहीनों! क्या यह आवश्यक नहीं था कि मसीह इन बातों को सहे और अपनी महिमा में प्रवेश करे?" (लूका 24:25-26) दूसरे शब्दों में, उसके क्रूस पर चढ़ाए जाने, मृत्यु और पुनरुत्थान की घटनाओं की भविष्यवाणी पुराने नियम के शास्त्रों में की गई थी। जो हुआ उसकी उन्हें उम्मीद करनी चाहिए थी! यीशु ने तब अपने अनुयायियों को वह दिया जो अब तक की सबसे उल्लेखनीय शिक्षाओं में से एक रही होगी: "और मूसा और सभी भविष्यद्वक्ताओं से शुरू होकर, उसने सभी पवित्रशास्त्र में अपने विषय में व्याख्या की" (लूका 24:27)। क्या आप उस संदेश को सुनना पसंद नहीं करेंगे!

प्रारंभिक मसीही कलीसिया के अगुओं ने पुराने नियम के यहूदी शास्त्रों पर भरोसा किया ताकि वे मसीह के पुनरुत्थान की व्याख्या कर सकें, सुसमाचार प्रस्तुत कर सकें और बढ़ती कलीसिया के लिए प्रमुख निर्णय को ले सकें। उदाहरण के लिए:

• पतरस ने भजन 16 का उपयोग करके यीशु के पुनरुत्थान की व्याख्या की। (प्रेरितों के काम 2:25-28)

- पौलुस ने भजन 2, यशायाह 55, और भजन 16 को पुनरुत्थान के प्रमाण के तौर पर इस्तेमाल किया। (प्रेरितों 13:32-37)
- फिलिप्पुस ने यशायाह 53 का उपयोग करके एक इथियोपियाई अगुवे को सुसमाचार समझाया। (प्रेरितों के काम 8:32-35)
- कलीसिया के अगुवों ने भजन सहिंता 16 और 109 में से यहूदा इस्किरियोती के स्थान पर अन्य एक प्रेरित को नियुक्त करने की अगुवाई पाई (प्रेरितों 1:19-20)
- अन्यजातियों के साथ सुसमाचार कैसे साझा किया जाएगा, इस बारे में महत्वपूर्ण निर्णय आमोस 9:11-12 पर आधारित थे। (प्रेरितों 15:15-18)

नए नियम की पत्रियाँ पुराने नियम के उद्धरणों से भरे हुए हैं। रोमियों अध्याय 3 में, प्रेरित पौलुस ने भजन संहिता, नीतिवचन, और भविष्यद्वक्ता यशायाह से परमेश्वर की विश्वासयोग्यता और मानवता की पापपूर्णता पर बल देने के लिए हवाला दिया। फिर वह समझाता है कि "व्यवस्था और भविष्यद्वक्ता" "यीशु मसीह में विश्वास के द्वारा परमेश्वर की धार्मिकता" की गवाही देते हैं (रोमियों 3:22)। इब्रानियों को लिखे पहले पत्री में, लेखक ने पुराने नियम के सात अलग-अलग अध्यायों को यीशु मसीह के ईश्वरत्व को सिद्ध करने के लिए उद्धृत किया है। लेखक उद्धरणों को ऐसे प्रस्तुत करता है जैसे कि परमेश्वर स्वयं बोल रहा हो (इब्रानियों 1:5, 6, 7, 8, 13)। यीशु और नए नियम के लेखकों द्वारा पुराने नियम के प्रयोग से यह स्पष्ट हो जाता है कि वे यहूदी शास्त्रों को परमेश्वर के वचन ही मानते थे। इन शब्दों में, उन्होंने अपने लोगों के लिए परमेश्वर की छुटकारे की महान योजना का प्रमाण पाया। यह योजना यीशु के क्रूस पर चढ़ाए जाने और पुनरुत्थान और मसीही चर्च की स्थापना में फलीभूत होगी। इसकी पराकाष्ठा प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में प्रकट की जाएगी। पवित्रशास्त्र की सभी छियासठ पुस्तकें परमेश्वर की योजना के प्रकाशन में योगदान करती हैं। बाइबल एक एकीकृत संपूर्ण—एक कहानी और एक योजना है—जो हमें एक पवित्र लेखक की प्रेरणा से दी गई है।

अध्याय दो
पुराने नियम को सीखने का मूल्य

चूँकि यीशु ने पुराने नियम की कई भविष्यवाणियों को पूरा किया है, और हमारे पास नया नियम है जो हमें सिखाता है कि उसके अनुयायियों के रूप में कैसे जीना है, क्या पुराने नियम का अध्ययन करने का कोई कारण है? बिल्कुल! जबकि हमें उस अनुग्रह से जीने के लिए बुलाया गया है जो यीशु के माध्यम से हमारे पास लाया गया है, हमें परमेश्वर की संपूर्ण सलाह (सभी छियासठ पुस्तकें) की आवश्यकता है ताकि हम अपने पूरे हृदय, आत्मा और बुद्धि से परमेश्वर से प्रेम कर सकें। बाइबल की प्रत्येक पुस्तक परमेश्वर की बड़ी तस्वीर वाली योजना में योगदान करती है, और हमारा आत्मिक जीवन उस योजना को आरम्भ से अंत तक समझने के लिए सशक्त होगा।

यहाँ पुराने नियम का अध्ययन करने, सीखने और प्रेम करने के लिए बढ़ने के दस कारण दिए गए हैं:

1. पुराना नियम हमें हमारे सृष्टिकर्ता के रूप में परमेश्वर के कार्य के बारे में सिखाता है। “आरम्भ में, परमेश्वर ने बनाया ..." (उत्पत्ति 1: 1) वह नींव प्रदान करता है जिस पर जीवन में बाकी सब कुछ टिका हुआ है। बाइबल की पहली पुस्तक हमारी समझ के लिए आवश्यक है कि परमेश्वर कौन है, उसने हमें क्यों बनाया, कैसे पाप ने हमें अलग किया, और कैसे परमेश्वर हमसे मेल-मिलाप करेगा।

2. पुराना नियम मानव पाप के विनाशकारी और दूरगामी प्रभावों को प्रकट करता है। नूह के समय से, जब मनुष्य इतने भ्रष्ट थे कि उनके विचार "निरंतर दुष्ट" थे (उत्पत्ति 6:5), न्यायियों के समय तक, जब "सब ने वही किया जो उसकी दृष्टि में ठीक था" (न्यायियों 21: 25), मनुष्यों ने परमेश्वर और उसके मार्गों को अस्वीकार कर दिया। पाप गंभीर है, और बाइबल यह छिपाने की कोई कोशिश नहीं करती कि यह कैसे परमेश्वर को क्रोधित करती है और लोगों को हानि पहुँचाती है।

3. पुराना नियम हमें परमेश्वर की पवित्रता के बारे में सिखाता है। पढ़ने के लिए सबसे चुनौतीपूर्ण पुराने नियम के कुछ पद बलिदान के नियमों के बारे में हैं। लैव्यव्यवस्था की पुस्तक (जहां कई पाठक दैनिक बाइबल पढ़ने की योजनाओं को छोड़ देते हैं!) याजकों और बलिदानों के बारे में व्यापक मार्गदर्शन प्रदान करता है। यह विस्तृत निर्देश इसलिए बनाया गया था ताकि परमेश्वर के लोग परमेश्वर की पृथकता को समझ सकें—अर्थात उसकी पवित्रता। परमेश्वर के लोगों को अलग होना था—अन्य लोगों से अलग—और लेवीय बलिदानों ने उस भेद को उजागर किया। लैव्यव्यवस्था 20:26 के शब्द पुराने नियम की कई व्यवस्थाओं के उद्देश्य को व्यक्त करते हैं: "तुम मेरे लिए पवित्र बने रहना; क्योंकि मैं यहोवा स्वयं पवित्र हूँ ,और मैं ने तुम को और देशों के लोगों से इसलिए अलग किया है, कि तुम निरन्तर मेरे ही बने रहो।" (लैव्यव्यवस्था 20:26) .

4. पुराना नियम हमें परमेश्वर के साथ चलने के लिए उदाहरण देता है। जैसा कि हम पढ़ते हैं कि इस्राएलियों के मिस्र से निर्गमन के बाद मूसा द्वारा नेतृत्व किया जा रहा था, तो हम उनके आवर्ती अविश्वास और अवज्ञा से प्रभावित होते हैं। आश्चर्यकर्म के बाद आश्चर्यकर्म देखने के बाद भी, वे परमेश्वर और उसके सेवक, मूसा के खिलाफ विद्रोह करने के लिए दृढ़ थे। उन्होंने बड़बड़ाया, कुडकुडाया, और मूर्तियों की उपासना की। जैसा कि प्रेरित पौलुस ने बाद में लिखा: "परन्तु परमेश्वर उन में से बहुतों से प्रसन्न न हुआ," (1 कुरिन्थियों 10:5)। हमें उनका लेखा-जोखा पवित्रशास्त्र में क्यों दिया गया है, और हमें उनसे क्या सीखना चाहिए? पौलुस इसे स्पष्ट करता है: "अब ये बातें हमारे लिये उदाहरण बन गईं, कि हम उन की नाईं बुराई की इच्छा न करें।" वह आगे कहता है, "ये बातें हमारे लिए दृष्टान्त ठहरीं, कि जैसे उन्होंने लालच किया, वैसे हम बुरी वस्तुओं का लालच न करें; परन्तु ये सब बातें, जो उन पर पड़ीं दृष्टान्त की रीति पर थीं; और वे हमारी चेतावनी के लिए जो जगत के अंतिम समय में रहते हैं लिखी गई हैं " (1 कुरिन्थियों 10:6,11)।

5. पुराने नियम की शिक्षा हमें प्रोत्साहन और आशा प्रदान करती है। रोमियों को लिखते हुए, प्रेरित पौलुस ने भजन संहिता 69:9 को उद्धृत करते हुए मसीह के निःस्वार्थ कष्टों के बारे में बताया: "तेरे निन्दकों की निन्दा मुझ पर आ पड़ी" (रोमियों 15:3)। अगले ही पद में, पौलुस उस प्रोत्साहन के बारे में लिखता है जो यहूदी शास्त्रों को सीखने के द्वारा हमारा हो सकता है: "जितनी बातें पहले से लिखी गईं, वे हमारी ही शिक्षा के लिये लिखी गईं हैं कि हम धीरज और पवित्रशास्त्र के प्रोत्साहन द्वारा आशा रखें" (रोमियों 15:4)।

6. दस आज्ञाएँ हमें सिखाती हैं कि हमें कैसे परमेश्वर और एक दूसरे से कैसे संबंध स्थापित करे। मुझे संदेह है कि इतिहास में कोई अन्य नैतिक संहिता है जिसने मानव जाति पर दस आज्ञाओं की तुलना में अधिक प्रभाव डाला है। परमेश्वर को एकमात्र सच्चे परमेश्वर के रूप में सम्मानित करने के आदेश से, हत्या, व्यभिचार और चोरी के विरुद्ध आज्ञाओं तक, इन आज्ञाओं ने उस समय से मानवता को लाभान्वित किया है जब से परमेश्वर ने उन्हें मूसा को दिया था। नए नियम में, यीशु यह स्पष्ट करता है कि ये आज्ञाएँ बाहरी व्यवहार से कहीं अधिक हैं। वे मानव हृदय के अभिप्रायों से बात करते हैं, और हमें परमेश्वर की दया, क्षमा और अनुग्रह के लिए हमारी आवश्यकता दिखाते हैं।

7. पुराना नियम परमेश्वर के गुणों और चरित्र को प्रकट करता है। यहूदी शास्त्र उसे सर्वशक्तिमान, सर्वज्ञ, हर जगह मौजूद, अपरिवर्तनीय, शाश्वत और व्यक्तिगत के रूप में प्रकट करते हैं। (भजन 29 और 139, मलाकी 3:6, यशायाह 40:28, और भजन 63:8) पुराने नियम में परमेश्वर के सबसे अधिक बार-बार दोहराए जाने वाले गुणों में से एक उसका दृढ़ प्रेम है। अपने लोगों के पापों और अविश्वास के बाद भी, परमेश्वर ने अपने अपनों से निष्ठावान प्रेम से प्रेम करना चुना है।

8. भजन संहिता की पुस्तक महिमा, सुख और प्रेरित प्रार्थनाओं का भंडार है। भजन संहिता को "यीशु के गीत" कहा गया है, क्योंकि वे हमेशा मसीह द्वारा उपयोग किए जाते थे।[2]बहुत से भजन कठिन, दर्दनाक परिस्थितियों में लिखे गए थे, और वे हमें दिखाते हैं कि परीक्षाओं और कष्टों के समय परमेश्वर के पास कैसे आना है। शायद भजन संहिता पवित्रशास्त्र में सुख का सबसे समृद्ध स्रोत है (तेईसवें भजन के बारे में सोचें)। जब हम विपत्ति में परमेश्वर की ओर मुड़ते हैं, तो हम उसे अपना गढ़, शरणस्थान, चट्टान, दृढ़ खंभा और चरवाहा पाते हैं। भजन हमें परमेश्वर को अच्छे से जानने और उससे अधिक प्रेम करने में सहायता करते हैं।

9. नीतिवचन की पुस्तक व्यावहारिक ज्ञान का भंडार है। नीतिवचन हमें अनुशासित जीवन जीना सिखाते हैं। ये ज्ञानपूर्ण बातें हमें पाप से बचने और विवेक का पालन करने में हमारा मार्गदर्शन करती हैं। नीतिवचन हमें सही व्यापार, व्यवहार और वित्तीय प्रबंधन में निर्देश देता है। ज्ञान की यह पुस्तक हमें अपने शब्दों की रक्षा करने और आत्म-संयम का अभ्यास करने के बारे में सिखाती है। जैसा कि भजन संहिता की पुस्तक परमेश्वर से संबंधित होने पर ध्यान केंद्रित करती है, नीतिवचन की पुस्तक एक दूसरे से संबंधित होने पर ध्यान केंद्रित करती है।

10. पुराना नियम हमें यीशु मसीह के सुसमाचार के लिए तैयार करता है। रोमियों अध्याय 3 में, प्रेरित पौलुस यह स्पष्ट करता है कि "व्यवस्था और भविष्यद्वक्ता" (पुराने नियम के पवित्रशास्त्र के) लोगों को सुसमाचार के लिए तैयार करने में एक अविश्वसनीय रूप से महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। पौलुस उल्लेख करता है कि "व्यवस्था के द्वारा पाप की पहचान होती हैं" (रोमियों 3:20)। बाद में वह इसे लिखकर स्पष्ट करता है: "क्योंकि मैं इस बात को न जान पाता कि लालच करना क्या होता है, यदि व्यवस्था न कहती, कि तू लालच न करना"(रोमियों 7:7)। पुराने नियम की व्यवस्था एक प्रकाश बिंदु के रूप में कार्य करती है जो हमें परमेश्वर की क्षमा के लिए हमारी आवश्यकता को दर्शाती है। लेकिन यहूदी शास्त्र और भी बहुत कुछ कहते हैं। पौलुस लिखता है कि वे किसी बात की "गवाही" देते हैं - "परमेश्वर की धार्मिकता उन सब के लिए है जो यीशु मसीह पर विश्वास करते हैं" (रोमियों 3:22)। पुराना नियम हमें नए नियम के लिए तैयार करता है। व्यवस्था हमें सुसमाचार के लिए तैयार करती है।

---

2 कैथी केलर और तीमुथियुस केलर, द सोंग ऑफ़ जीसस (रैंडम हाउस: पेंगुइन, 2015), ix.

अध्याय 3

पुराने नियम के बारे में प्रश्न

प्रश्न 1:
क्या हमें पुराने नियम की व्यवस्थाओं का पालन करना है?
प्रतिक्रिया:

बाइबल के विद्वानों ने लंबे समय से पुराने नियम की व्यवस्थाओं को तीन श्रेणियों में विभाजित किया है: नागरिक, औपचारिक और नैतिक व्यवस्थाएं। नागरिक व्यवस्थाएं इस्राएल राष्ट्र को उनके कार्यों को नियंत्रित करने और विशेष लोगों के रूप में परमेश्वर से उनके अलगाव को उजागर करने के लिए दी गयी थीं। औपचारिक नियमों ने इस्राएल की आराधना को निर्देशित किया, और कई बलिदानों ने एक पवित्र परमेश्वर के सामने उनके पापों के लिए प्रायश्चित की आवश्यकता पर प्रकाश डाला। नागरिक और औपचारिक नियम मसीह की ओर इशारा करते हैं और उसमें अपनी सम्पूर्णता पाते हैं। यीशु ने खुद इस बात पर बल डाला जब उसने शुद्ध और अशुद्ध भोजन के बारे में नियमों की ओर इशारा किया। मरकुस 7 में हम पढ़ते हैं:

> ऐसी कोई वस्तु नहीं जो मनुष्य में बाहर से समाकर उसे अशुद्ध करे; परन्तु जो वस्तुएँ मनुष्य के भीतर से निकलती हैं, वे ही उसे अशुद्ध करती हैं। जब वह भीड़ के पास से घर में गया, तो उसके चेलों ने इस दृष्टान्त के विषय में उस से पूछा। उसने उनसे कहा, "क्या तुम भी ऐसे नासमझ हो? क्या तुम नहीं समझते कि जो वस्तु बाहर से मनुष्य के
> भीतर जाती है, वह उसे अशुद्ध नहीं कर सकती? क्योंकि वह उसके मन में नहीं, परन्तु पेट में जाती है और संडास में निकल जाती है?" यह कहकर उसने सब भोजन वस्तुओं को शुद्ध ठहराया। (मरकुस 7:14-19)

यीशु यह स्पष्ट करता है कि पुराने नियम के कुछ प्रकार के खाद्य पदार्थों को मना करने वाले नियम अब उसके अनुयायियों के लिए अनिवार्य नहीं थे।

प्रेरितों के काम 15 में, आरंभिक कलीसिया के अगुवों ने इस बात पर विचार करने के लिए सभा की, कि क्या अन्यजातियों के धर्मान्तरित लोगों का खतना कराने और मूसा की व्यवस्था का पालन करने की आवश्यकता है। प्रेरित पतरस ने कहा:

"तो अब तुम क्यों परमेश्वर की परीक्षा करते हो कि चेलों की गरदन पर ऐसा जुआ रखो, जिसे न हमारे बापदादे उठा सके थे और न हम उठा सकते हैं? हाँ, हमारा यह निश्चय है कि जिस रीति से वे प्रभु यीशु के अनुग्रह से उद्धार पाएँगे; उसी रीति से हम भी पाएँगे। (प्रेरितों 15:10-11)

स्पष्ट रूप से, खतने की पुराने नियम की आवश्यकता अब मसीह के अनुयायियों पर लागू नहीं होती।

नागरिक और औपचारिक नियमों के साथ, पुराने नियम के नैतिक आदेश भी यीशु में अपनी पूर्ति पाते हैं। हालाँकि नैतिक आदेश (दस आज्ञाओं की तरह) मसीहियों द्वारा जीते हैं क्योंकि हम उसकी आत्मा की सामर्थ में मसीह का अनुसरण करते हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि यीशु के मन में यही था जब उसने कहा:

“उस ने उस से कहा, तू परमेश्वर अपने प्रभु से अपने सारे मन और अपने सारे प्राण और अपनी सारी बुद्धि के साथ प्रेम रख। बड़ी और मुख्य आज्ञा तो यही है। और उसी के समान यह दूसरी भी है, कि तू अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम रख। ये ही दो आज्ञाएं सारी व्यवस्था और भविष्यद्वक्ताओं का आधार है॥।“ (मत्ती 22: 37-40)“

बाद में, पौलुस प्रेरित ने रोम की कलीसिया को लिखा:

आपस के प्रेम को छोड़ और किसी बात में किसी के कर्जदार न हो; क्योंकि जो दूसरे से प्रेम रखता है, उसी ने व्यवस्था पूरी की है। क्योंकि यह कि व्यभिचार न करना, हत्या न करना; चोरी न करना; लालच न करना; और इन को छोड़ और कोई भी आज्ञा हो तो सब का सारांश इस बात में पाया जाता है, कि अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम रख। प्रेम पड़ोसी की कुछ बुराई नहीं करता, इसलिये प्रेम रखना व्यवस्था को पूरा करना है॥ (रोमियों 13:8-10)

संक्षेप में, मसीही विश्वासियों को वास्तव में पुराने नियम की व्यवस्था की तुलना में कहीं अधिक उच्च स्तर से जीने के लिए बुलाया गया है—प्रेम की व्यवस्था। परमेश्वर की नैतिक व्यवस्थाओं के प्रति हमारी आज्ञाकारिता परमेश्वर और दूसरों के लिए प्रेम से प्रवाहित होनी चाहिए। परमेश्वर का उद्देश्य हमारे हृदयों को बदलना है ताकि हम पवित्र आत्मा की शक्ति में चल सकें। जैसा कि पौलुस प्रेरित लिखता है:

सो अब जो मसीह यीशु में हैं, उन पर दण्ड की आज्ञा नहीं: क्योंकि वे शरीर के अनुसार नहीं वरन आत्मा के अनुसार चलते हैं। क्योंकि जीवन की आत्मा की व्यवस्था ने मसीह यीशु में मुझे पाप की, और मृत्यु की व्यवस्था से स्वतंत्र कर दिया। क्योंकि जो काम व्यवस्था शरीर के कारण दुर्बल होकर न कर सकी, उस को परमेश्वर ने किया, अर्थात अपने ही पुत्र को पापमय शरीर की समानता में, और पाप के बलिदान होने के लिये भेजकर, शरीर में पाप पर दण्ड की आज्ञा दी। इसलिये कि व्यवस्था की विधि हम में जो शरीर के अनुसार नहीं वरन आत्मा के अनुसार चलते हैं, पूरी की जाए। (रोमियों 8:1-4)

. . . . . .

प्रश्न 2

मसीही कैसे लैव्यव्यवस्था (18:22,20:13) की ओर इशारा कर सकते हैं यह कहने के लिए कि समलैंगिक प्रथा सही नहीं है, जब वही पुराने नियम की पुस्तक कहती है कि दो प्रकार के बीज वाले खेत को बोना, या दो प्रकार के कपड़े वाले वस्त्र पहनना गलत है? (लैव्यव्यवस्था 19:19)

प्रतिक्रिया:

जबकि नागरिक और औपचारिक व्यवस्था मसीह में अपनी पूर्ति पाते हैं, कामुकता के बारे में पुराने नियम की व्यवस्थाओं को नए नियम में दोहराया जाता है। जैसा कि पादरी और लेखक केविन डीयॉन्ग लिखते हैं: "पुराने नियम की यौन नैतिकता को बलिदान प्रणाली की तरह निरस्त नहीं किया गया था, बल्कि इसे

प्रारंभिक चर्च में आगे बढ़ाया गया था।"[3] यीशु और पौलुस प्रेरित दोनों ने उत्पत्ति 2:24 के "एक तन" निर्देश की ओर इशारा किया, इस बात पर जोर देते हुए कि यौन एक पुरुष और एक महिला के बीच विवाह की सीमा के भीतर होना चाहिए। इसके अतिरिक्त, नया नियम समलैंगिक व्यवहार को अनैतिकता के रूप में शामिल करने में सुसंगत और स्पष्ट है (रोमियों 1:24-31, 1 कुरिन्थियों 6:9-10, 1 तीमुथियुस 1:9-10)।

. . . . . .

प्रश्न 3:
पुराने नियम में बहुविवाह की अनुमति क्यों दी गई?

प्रतिक्रिया: संक्षिप्त उत्तर है: "मुझे नहीं पता!" यह स्पष्ट है कि राजा दाऊद और राजा सुलैमान जैसे अगुवों की कई पत्नियाँ थीं, और यह उत्पत्ति 2:24 के सिद्धांत का उल्लंघन प्रतीत होता है, विशेषकर जब इसे यीशु (मत्ती 19:4-6) और पौलुस प्रेरित (इफिसियों 5: 31) द्वारा लागू किया गया था। संभवतः इस प्रश्न का उत्तर देने का सबसे अच्छा तरीका फरीसियों के लिए यीशु के उत्तर पर भरोसा करना है जब उन्होंने तलाक के लिए पुराने नियम के भत्ते के बारे में उससे प्रश्न किया था। यीशु ने उत्तर दिया, "मूसा ने तुम्हारे मन की कठोरता के कारण तुम्हें अपनी- अपनी पत्नी को छोड़ देने की आज्ञा दी, परन्तु आरम्भ से ऐसा नहीं था।" (मत्ती 19:8)। यीशु हमें विवाह के लिए परमेश्वर की मूल योजना की ओर वापस बुलाता है—एक पुरुष और एक स्त्री। पौलुस प्रेरित इस बात की पुष्टि करता है कि कलीसिया के अगुवों को "एक ही पत्नी का पति" होना चाहिए (1 तीमुथियुस 3: 2, 12)।

. . . . . .

3 केविन डी यंग, *बाइबल वास्तव में समलैंगिकता के बारे में क्या सिखाती है?*

(व्हीटन: क्रॉसवे, 2015), 44.

प्रश्न 4:
पुराने नियम में इतनी अधिक हिंसा क्यों थी?

प्रतिक्रिया:

जब से आदम और हव्वा ने परमेश्वर के विरुद्ध विद्रोह किया और वर्जित फल खाया, तब से पाप ने मानव जाति में अपना विनाशकारी कार्य आरम्भ किया। आदम और हव्वा के पहलौठे बेटे कैन ने अपने भाई हाबिल की हत्या कर दी। नूह के समय तक, "यहोवा ने देखा कि मनुष्य की बुराई पृथ्वी पर बढ़ गई है" (उत्पत्ति 6:5)। पुराने नियम का अभिलेख मानवजाति के पाप-के कारण रक्तपात और युद्ध से भरा हुआ है। परमेश्वर ने भविष्यद्वक्ताओं, न्यायियों और राजाओं को अपनी प्रजा का मार्गदर्शन करने के लिये खड़ा किया, परन्तु उसकी प्रजा ने निरन्तर विद्रोह किया। न्यायियों की पुस्तक, जो रक्तपात के विवरण से भरी हुई है, इस गंभीर वचन के साथ समाप्त होती है: "उन दिनों में इस्राएलियों का कोई राजा न था; जिसको जो ठीक जान पड़ता था वही वह करता था।" (न्यायियों 21:25)।

भविष्यवक्ता यशायाह ने एक ऐसे व्यक्ति के बारे में भविष्यवाणी की जो "शांति के राजकुमार" के रूप में आएगा, यह देखते हुए कि "उसकी प्रभुता सर्वदा बढ़ती रहेगी, और उसकी शान्ति का अन्त न होगा" (यशायाह 9:6-7)। हिंसा मानव पाप का परिणाम है। मसीह के अनन्त राज्य में शांति होगी। जो यीशु को जानते हैं वे अब "परन्तु धर्म और मेल- मिलाप और वह आनन्द है जो पवित्र आत्मा से होता है" (रोमियों 14:17)।

. . . . . .

प्रश्न 5:
परमेश्वर ने इस्राएलियों से कनानियों का सफाया करने के लिए क्यों कहा?

प्रतिक्रिया:

यह पुराने नियम में समझने के लिए सबसे चुनौतीपूर्ण चीजों में से एक है। बहुत से लोग परेशान होते हैं जब वे परमेश्वर के मार्गदर्शन को इस प्रकार पढ़ते हैं:

> "परन्तु जो नगर इन लोगों के हैं, जिनका अधिकारी तेरा परमेश्वर यहोवा तुझ को ठहराने पर है, उनमें से किसी प्राणी को जीवित न रख छोड़ना, परन्तु उनका अवश्य सत्यानाश करना, अर्थात हित्तियों, ऐमोरियों, कनानियों परिज्जियों, हिब्बियों, और यबूसियों को, जैसे कि तेरे परमेश्वर यहोवा ने तुझे आज्ञा दी है, ऐसा न हो कि जितने घिनौने काम वे अपने देवताओं की सेवा में करते आए हैं वैसा ही करना तुम्हें भी सिखाएँ, और तुम अपने परमेश्वर यहोवा के विरुद्ध पाप करने लगो। (व्यवस्थाविवरण 20:16-18)

परमेश्वर इस्राएलियों को ऐसा करने के लिए क्यों कहेगा? आइए पहले स्मरण रखें कि परमेश्वर सर्वज्ञ है और वह (और केवल वह) जानता है कि कब कोई संस्कृति या लोगों का समूह पश्चाताप की किसी भी संभावना से परे है। नूह के समय में परमेश्वर ने न्याय किया और पृथ्वी को नष्ट कर दिया, केवल नूह और उसके परिवार को छोड़ दिया। परमेश्वर ने सदोम और अमोरा का न्याय किया और उन्हें नष्ट कर दिया, यह जानते हुए कि वहाँ दस धर्मी लोग भी नहीं थे।

कनानियों के पाप लगभग वर्णन से परे थे। मूर्तिपूजा के उनके सबसे भयानक रूपों में से एक में अपने छोटे बच्चों को देवता मोलेक को आग में अर्पित करना शामिल था।

परमेश्वर ने इस्राएलियों पर आरोप लगाया कि वे इस तरह के काम कभी नहीं करेंगे, यह कहते हुए: "अपनी सन्तान में से किसी को मोलेक के लिये होम करके न चढ़ाना, और न अपने परमेश्वर के नाम को अपवित्र ठहराना; मैं यहोवा हूँ" (लैव्यव्यवस्था 18:21)। यहोवा ने अपनी प्रजा से कहा, कि कनानियों ने अपनी मूर्तिपूजा के द्वारा भूमि को भी अशुद्ध कर दिया है। उसने उन्हें चेतावनी दी: " ऐसा कोई भी काम करके अशुद्ध न हो जाना, क्योंकि जिन जातियों को मैं तुम्हारे आगे से निकालने पर हूँ वे ऐसे ऐसे काम करके अशुद्ध हो गयी हैं; और उनका देश भी अशुद्ध हो गया है, इस कारण मैं उस पर उसके अधर्म का दण्ड देता हूँ, और वह देश अपने निवासियों को उगल देता है। " (लैव्यव्यवस्था 18:24-25)।

स्पष्ट रूप से, कभी-कभी पाप लोगों पर इतना हावी हो जाता है कि परमेश्वर जानता है कि वे पश्चाताप की संभावना से परे हैं। कैंसर की तरह, यह पाप दूसरों को संक्रमित करने के लिए ही बढ़ेगा। ऐसे समय होते हैं जब परमेश्वर, एक कुशल सर्जन की तरह, जानते हैं कि पाप की बीमारी को दूर किया जाना चाहिए ताकि यह दूसरों को नष्ट न करे। ऐसा प्रतीत होता है कि यही कारण है कि परमेश्वर ने कुछ लोगों को नष्ट करने के लिए इस्राएलियों को बुलाया।

क्या इस्राएलियों ने अपने आप को और अपने बच्चों को कनानी पाप की संक्रामक बीमारी से बचाते हुए पूरी तरह से आज्ञा का पालन किया?, भजन संहिता 106:34-39 हमें दुखद विवरण देता है:

> जिन लोगों के विषय यहोवा ने उन्हें आज्ञा दी थी, उनका उन्होंने सत्यानाश न किया, वरन उन्हीं जातियों से हिलमिल गए और उनके व्यवहारों को सीख लिया; और उनकी मूर्तियों की पूजा करने लगे, और वे उनके लिए फंदा बन गई। वरन उन्होंने अपने बेटे-बेटियों को पिशाचों के लिए बलिदान किया; और अपने निर्दोष बेटे-
> बेटियों का लहू बहाया जिन्हें उन्होंने कनान की मूर्तियों पर बलि किया, इसलिए देश खून से अपवित्र हो गया। और वे आप अपने कामों के द्वारा अशुद्ध हो गए, और अपने कार्यों के द्वारा व्यभिचारी भी बन गए। (भजन संहिता 106:34-39)

कनानियों के विनाश के बारे में एक और बात कहने की आवश्यकता है। परमेश्वर की दया किसी भी कनानी के लिए पर्याप्त थी जो उसकी ओर मुड़ता था। यहोशू अध्याय 2 हमें वेश्या राहाब का विवरण देता है, जिसने इस्राएली जासूसों से कहा था कि "तुम्हारा परमेश्वर यहोवा ऊपर के आकाश में और नीचे की पृथ्वी पर परमेश्वर है" (यहोशू 2:11)। जब यरीहो के अन्य निवासियों को नष्ट कर दिया गया तो उसे और उसके सारे परिवार को छोड़ दिया गया। उसके विश्वास से, यह गैर-इस्राएली राजा दाऊद की परदादी भी बन गई, और यीशु की वंशावली में शामिल है! परमेश्वर की दया सर्वदा उसके लिए उपलब्ध होती है जो उसकी ओर मुड़ता है।

. . . . . .

प्रश्न 6:
मुझे पुराने नियम का अध्ययन कैसे करना चाहिए?

प्रतिक्रिया:

याद रखें कि बाइबल एक तरह से संपूर्ण है। उत्पत्ति से प्रकाशितवाक्य तक की छियासठ पुस्तकें सभी परमेश्वर से प्रेरित हैं और हमारे आत्मिक विकास के लिए लाभदायक हैं (2 तीमुथियुस 3:16-17)। और जबकि नया नियम निश्चित रूप से यीशु मसीह के अनुयायी के रूप में विकास के लिए स्पष्ट मार्गदर्शन प्रदान करता है, पुराना नियम हमारे विश्वास के लिए एक महत्वपूर्ण आधार है।

नए मसीहियों के लिए जिन्होंने कभी बाइबल नहीं पढ़ी है, मैं उन्हें नए नियम से आरम्भ करने की सलाह देता हूं। मुझे लगता है कि हम नए के प्रकाश में पुराने नियम की अधिक सराहना कर सकते हैं। जैसा कि किसी ने कहा है:

"नया नियम पुराने में छिपा है, पुराना नए में प्रकट हुआ है।"

अधिक अनुभवी मसीहियों के लिए, एक वर्ष में बाइबल पढ़ने के लिए एक उपयोगी योजना स्कॉटिश पादरी रॉबर्ट म्यूरे एम चेने द्वारा विकसित की गई थी। नए नियम और भजन संहिता की प्रयोज्यता को स्वीकार करते हुए, इस योजना के माध्यम से पाठक पूरी बाइबल को एक वर्ष में एक बार और नए नियम और भजन संहिता को दो बार पढ़ सकते है।

पुराने नियम को पढ़ते समय, याद रखें कि "व्यवस्था और भविष्यद्वक्ता" हमें यीशु के आने के लिए तैयार करते हैं और संकेत देते हैं। याद रखें कि पुराने नियम की व्यवस्था परमेश्वर की पवित्रता और उसकी क्षमा के लिए हमारी आवश्यकता की ओर इशारा करती हैं। याद रखें कि पुराने नियम के इतिहास में लोगों और उत्तरदायित्व को हमारे लिए उदाहरण और चेतावनी के रूप में रखा गया है। और, अंत में, याद रखें कि हमें पवित्र आत्मा के शिक्षाप्रद कार्य की आवश्यकता है, जिसने पवित्रशास्त्र के लेखन को प्रेरित किया, ताकि हमें उन्हें समझने में सहायता मिल सके।

जब यीशु ने अपने शिष्यों से कहा कि "मूसा और भविष्यद्वक्ताओं की व्यवस्था में मेरे बारे में लिखा गया सब कुछ पूरा होना चाहिए,"तब उसने पवित्रशास्त्र को समझने के लिये उनकी समझ खोल दी। " (लूका 24:44-45)। हमें भी उस आत्मा पर भरोसा करना है कि वह आज भी हमारे लिए वही सब कर सकता है!